KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMICS, COMMERCE & BUSINESS MANAGEMENT
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJECBM/ JAN-MAR (2018)/VOL-5/ISS-1/A9 PAGE NO.30-31
ISSN: 2348-4969 IMPACT FACTOR (2017) – 7.8902
UGC APPROVED JOURNAL NO. 47663
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

दलित कहानियों में वर्णित सामाजिक व्यवस्था: विद्रोह के स्वर

[1]डॉ॰ शकुंतला

[1]एक्सटेंशन लेक्चरर वैश्य महिला महाविद्यालय, रोहतक

सारांश

भारतीय समाज में रीति रिवाज, अंधविश्वास एवं रूढ़ियाँ जीवन के एक आवश्यक अंग के रूप में विद्यमान है, दलित समाज भी इससे अछूता नहीं है। अधिकांशतः वे हिन्दू, इस्लाम, ईसाई और बुद्धि धर्म को मानने वाले हैं। विभिन्न लोक फकीर, देवताओं के साथ–साथ रविदास, कबीर, वाल्मीकि, शिव, हनुमान, संतोषी माता, नंदा देवी, वैष्णों देवी तथा वृक्षों में पीपल तथा तुलसी आदि में उनकी आस्था है। आस्था और कर्म धर्म के दो मुख्य उपदान माने जा सकते हैं। दोनों के समन्वय से ही धार्मिक साधना सम्पन्न होती है। आस्था अपूर्ण है। देवी–देवताओं की पूजा, तीर्थ स्थलों की यात्रा और गंगा स्नान विभिन्न संसार आदि ईश्वर के प्रति आस्था और धर्म के उत्सव हैं।

भारतीय समाज में रीति रिवाज, अंधविश्वास एवं रूढ़ियाँ जीवन के एक आवश्यक अंग के रूप में विद्यमान है, दलित समाज भी इससे अछूता नहीं है। अधिकांशतः वे हिन्दू, इस्लाम, ईसाई और बुद्धि धर्म को मानने वाले हैं। विभिन्न लोक फकीर, देवताओं के साथ–साथ रविदास, कबीर, वाल्मीकि, शिव, हनुमान, संतोषी माता, नंदा देवी, वैष्णों देवी तथा वृक्षों में पीपल तथा तुलसी आदि में उनकी आस्था है। आस्था और कर्म धर्म के दो मुख्य उपदान माने जा सकते हैं। दोनों के समन्वय से ही धार्मिक साधना सम्पन्न होती है। आस्था अपूर्ण है। देवी–देवताओं की पूजा, तीर्थ स्थलों की यात्रा और गंगा स्नान विभिन्न संसार आदि ईश्वर के प्रति आस्था और धर्म के उत्सव हैं। समकालीन हिन्दी–मराठी दलित लेखकों का मानना है कि प्रत्येक जाति और धर्म के लोगों ने अपने अलग–अलग रीति–रिवाज, अंधविश्वास एवं रूढ़ियों के उसूल बना लिए हैं। हालाँकि ये सब रूढ़ि–परम्परा और अंधविश्वास बाह्याडम्बर के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। जब व्यक्ति विवेकशून्य होकर परम्परागत रीतिरिवाज, रूढ़ियों व मान्यताओं को मानता चला जाता है, उनकी अच्छाई–बुराई को विवेक की कसौटी पर नहीं कसता तब वे मान्यताएँ अंधविश्वास का रूप ले लेती है। जैसे कि स्त्रियों द्वारा अपने पतियों व पुत्रों की दीर्घायु के लिए व्रत रखना, मूर्तिपूजा, '' 'ऊँ' अक्षर ही ब्रह्मस्वरूप है, यह अक्षर ही परब्रह्म है। इस अक्षर को जानकर जो पुरूष जैसी इच्छा करता है, उसको वह ही प्राप्त होता है। इस अक्षर का आश्रय श्रेष्ठ है। यह आश्रम सर्वोत्कृष्ट है। इस आश्रय को जानकर वह ब्रह्मलोक में पूजित होता है। ... आदि।''[1] समकालीन दलित लेखक शरण कुमार लिम्बाले, 'चकता' कहानी में लिखते हैं किस प्रकार अज्ञात, अंधविश्वास के कारण सदियों से चली आ रही परम्पराओं, रीति रिवाज एवं रूढ़ियों को मानते हुये जादूटोनों, झाड़फूंक, देवी, पितरों की आराधना करते हुए दिखाई देते हैं कि किस प्रकार बीमार व्यक्ति को डॉक्टर के पास न ले जाकर ओझा, तांत्रिक के चक्कर में आकर जादू–टोना, झाड़–फूंक के उपचार में लग जाते हैं। ''माँ कहती तूने देवी का अपराध किया है, सजा मांग ले, दाग चला जायेगा। मैं देवी को मानता हूँ। देवी को गुहार लगाता। लक्ष्मी की गढ़ी के सामने जाकर हलगी बजाने से तन–मन भर जाता।'' वहीं दलित लेखक शरण कुमार लिम्बाले 'अन्धेरे का गर्भ' कहानी में अंधविश्वास एवं रूढ़ियों पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि अंधविश्वास में व्यक्ति विवेक शून्य होकर अनैतिक कार्य कर बैठता है, उसे किसी के मृत्यु व जीवन से कोई लेना देना नहीं होता। बस वह अपने स्वार्थपूर्ति में लगा रहता है। किसी प्रकार हवेली निर्माण के लिए मुखिया द्वारा गर्भवती महारण को हवेली की नींव में गाढ़ना। समाज में व्याप्त अंधविश्वास को दर्शाता है। ''मुखिया की हवेली मैंने ही बनाई है, पता है तुझे? दिन में काम चलता था और रात में वह अपने आप जमीन में धँस जाता था। .... मुखिया एक ओझा को ले आया। पता है, जानकार ने क्या बताया? उसने कहा, हवेली का काम कभी भी पूरा नहीं होगा। अगर पूरा करना चाहते

1 डॉ० नन्दलाल मेहता वागीश : शब्द परम्परा और राष्ट्रीय चेतना, पृ. 46

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

हो तो ग्रह शांति करनी होगी। बिना शान्ति किये हवेली का काम पूरा नहीं होगा।'' शान्ति करने का मतलब समझते हो? कृष्णा राज बता रहा था। ओझा ने क्या बताया, मालूम है? उसने कहा कि हवेली की नींव में किसी गर्भवती महारण को गाड़ना होगा। किसे गाड़ा गया, जानता है? अरे, तेरी माँ को गाड़ दिया गया। ... तुम्हारी माँ खेत से काम करके लौट रही थी। ... मुखिया के मुलाजिमों ने उसे रास्ते में ही पकड़ लिया। ... रात में उसे हवेली की नींव में गाड़ दिया गया। ओझा अभु आकर काँपने लगा था। मंत्र बोले जा रहा था। तुम्हारी माँ मौत के डर से काँप रही थी। चिल्ला रही थी, 'मेरे पेट में बच्चा है, मुझे छोड़ दो।''[2] दलित लेखक अजय यतीश ने 'भूत' कहानी में रीति–रिवाज व अंधविश्वास का वर्णन करते हुए कहते हैं किस प्रकार दलित व्यक्ति अज्ञानता व अशिक्षा के कारण बीमारी के लक्षणों को न जाकर ओझा व तांत्रिकों के पास जाना अच्छा समझते हैं। ''एक ही बच्चा है, यदि इसे कुछ हो गया तो हम जिन्दा कैसे रहेंगे?... इसी बची ओझाई में प्रयोग की गई चीजें जैसे की चावल, धूप, धूवन, फूल, काले कपड़े का टुकड़ा, नींबू, सूई, मिट्टी का ढ़क्कन आदि सभी को लाल कपड़े में बाँधकर गाँव के मुख्य चौराहे पर चुपके से रख दिया गया, ताकि बच्चा जल्दी से स्वस्थ हो जाए। ... लेखक आगे लिखता है कि इस प्रकार के रीति–रिवाजों व अंधविश्वासों का फायदा उठाकर तांत्रिक लोग दलित समाज का आर्थिक शोषण तो करते ही हैं साथ ही कई बार ये तांत्रिक लोग चमेला जैसी दलित स्त्रियों का दैहिक शोषण भी करते नजर आते हैं। ''जटु भगत के इशारे पर जंगी दबे पाँव झोपड़ी के अन्दर जा घुसा। अन्दर नशे की हालत में चमेलवा खाट पर बेसुध पड़ी थी। जंगी ने उसे पैनी नजरों से देखा और धीरे से जाकर बगल में लेट गया।''[3] दलित लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि ने 'ग्रहण' कहानी में अंधविश्वास पर प्रकाश डालते हुए बताने का प्रयास किया है। किसी प्रकार रीति–रिवाज व रूढ़ियों के प्रभाव में आकर प्राकृतिक घटनाओं (चन्द्र व सूर्य ग्रहण) को राहु–केतु का प्रभाव मानकर इसे अशुभ मानते हैं। उनका वैज्ञानिक गतिविधि से कोई लेना–देना नहीं होता। ''भाब्बी अभी तो राहु–केतु अपने–अपने हथियार पत्थर से रगड़ के तेज कर रहे होंगे ... इबके तो पूरी तय्यारी से आवेंगे ... बस्स एक ही झटके में चाँद कू आधा कर देंगे, खरबूजे की फांक–सा।''[4] दलित लेखिका हेमलता महीश्वर ने 'एक और खाप पंचायत' कहानी में बताने का प्रयास किया है कि किस प्रकार रीति–रिवाज, रूढ़ियों व परम्पराओं के नाम पर मात्र दिखावे के लिए हजारों–लाखों रूपयों को पानी की तरह खर्च कर दिया जाता हैं। वहीं दूसरी ओर संकीर्ण रूढ़िवादी मानसिकता के द्वारा 'आस्तिक व नास्तिक परम्परा के नाम पर समाज को बांटने का कार्य करते हुए दिखाई देते हैं। ''हमारा धर्म आपने ले लिया और बोलती है, कुछ किया ही नहीं। ... आपने मंदिर परिसर में रहने वाली कुतिया को खाना खिलाया और हमारा धर्म भ्रष्ट किया – पर मिश्रा जी मैंने तो सिर्फ भूखी कुतिया को खाना डाला था और साथ में वह पागल लड़का जो कुतिया का खाना छिन रहा था, उसे मैंने अपने टिफिन से खाना दिया था, मैं खुद भूखी रह गई हूँ आज। ... बात ही काट दी मिश्रा जी ने और कहा 'बस! बहुत हुआ! इतने समय से हम धार्मिक संस्कारी लोग आप जैसे नास्तिक लोगों को झेलते आ रहे हैं। हम सबने मिलकर तय किया है कि हमारा धर्म भ्रष्ट करने पर आप लोगों को 5000 रूपयों का जुर्माना देना पड़ेगा।''[5] लेखिका कहती है कि यह जुर्माना लगाना मिश्रा जैसी रूढ़िवादी, अंधविश्वासी लोगों का कार्य है जो धार्मिक परम्परा व रीति रिवाज की दुहाई देकर समाज को गुमराह करते हैं, ताकि दलित लोग ज्ञानवर्द्धक कार्य न कर धर्म, परम्पराओं रूढ़ियों में ही उलझे रहे।

2 शरण कुमार लिम्बाले, दलित ब्राह्मण कहानी संग्रह, पृ० 76–77

3 सं० सूरजपाल चौहान, हिन्दी के दलित कथाकारों की पहली कहानी, पृ० 36–38

4 ओमप्रकाश वाल्मीकि : सलाम कहानी संग्रह, पृ० 67

5 रमणिका गुप्ता, युद्धरत आम आदमी पत्रिका, जनवरी–मार्च 2012, पृ० 24

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org